जुड़, शि बन्धे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (तुदां-परं-सकं-सेट्।) शि, जुड़ति अजुड़ीत्। ताड़ुच्छृङ्खलतापन्नान् शृङ्खलेन जुड़त्यसौ। जुजोड़। इति दुर्गादासः॥

जुत, ऋ ङ दीप्तौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-अकं-सेट्।) ऋ, अजुजोतत्। ङ, जोतते। इति दुर्गादासः॥

जुन, श गतौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (तुदां-परं-सकं-सेट्।) श, जुनति जोनिता। इति दुर्गादासः॥

जुर्व, ई वधे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-परं-सकं-सेट्।) जुर्वी। जूः जुरौ जुरः। ई, जूर्णः। इति दुर्गादासः॥

जुल, क पिषि। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां-परं-सकं-सेट्।) क, जोलयति। पिषि चूर्णीकरणे। इति दुर्गादासः॥

जुष, कि तर्के। ऊहौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां पक्षे भ्वां-परं-सकं-अकं च-सेट्।) कि, जोषयति जोषत्यन्यगुणं सुधीः। तर्कयतीत्यर्थः। इति दुर्गादासः॥

जुष, श ङ ई भि सुदि। सेवे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (तुदां-आत्मं-अकं-सकं च-सेट्।) षष्ठस्वरी। श ङ, जुषते। ई भि, जुष्टोऽस्ति। सुदि हर्षे। इति दुर्गादासः॥

जुष्कक:, पुं, (जुष+कक्। ततः संज्ञायां कन्।) यूषः। इति शब्दचन्द्रिका॥

जुष्टं, क्ली, (जुष्यते स्म इति। जुष+क्तः।) उच्छिष्टम्। सेविते, त्रि। इति मेदिनी। टे, १५॥ (यथा, भट्टिः। १। ४।
"पुण्यो महाब्रह्मसमूहजुष्टः
सन्तर्पणो नाकसदां वरेण्यः॥")

जुष्यः, त्रि, (जुष+कर्म्मणि क्यप्।) सेव्यः। इति मुग्धबोधम्॥

जुहुवान:, पुं, (हूयते इति। हु+कर्म्मणि कानच्।) कठिनहृदयः। अग्निः। वृक्षः। इति संक्षिप्तसारे उणादिवृत्तिः॥

जुहूः, स्त्री, (जुहोत्यनया। इति हु+"हुवः श्लुवच्च।" उणां। २।६०। इति क्विप् निपातनात् दीर्घत्वं द्वित्वञ्च।) पलाशकाष्ठनिर्म्मितार्द्धचन्द्राकृतियज्ञपात्रम्। जुहोत्यनया जुहूः। इत्यमरभरतौ॥ (यथा, ऋग्वेदे। १। ७६। ५।
"अग्ने! सन्त्वया जुह्वा यजस्व॥")

जुहूराणः, पुं, (जुह्वं रणति इति। "कर्म्मण्यण्।" ३। २। १। इत्यण्।) अग्निः। अध्वर्युः। इति विश्वः॥ चन्द्रः। इत्युणादिकोषः॥

जुहूवान्, [त्] पुं, (जुहूः पात्रं होमक्रियोद्देश्यतयास्त्यस्मिन्। जुहू+मतुप निपातनात् मस्य वत्वम्।) अग्निः। इति शब्दरत्नावली॥

जूः, स्त्री, (जु+"क्विब्वचिप्रच्छीति।" उणां। २। ५७। क्विप् दीर्घश्च।) आकाशः। सरस्वती। पिशाची। जवनम्। इति शब्दरत्नावली॥ त्वरागमनम्। गमनम्। इति मेदिनी। जे, २॥

जूटः, पुं, (जट सङ्घाते+अच् निपातनादूत्वागमे साधुः।) शिवजटा। इत्यमरटीकायां भरतः। जटा। इति शब्दरत्नावली॥

जूटकं, क्ली, (जूट+स्वार्थे कन्।) केशबन्धः। जटा। इति भूरिप्रयोगः॥

जूतिः, स्त्री, (जु वेगे+"ऊतियूतिजूतीति।" ३।३।९७। इति क्तिन् निपातनात् दीर्घत्वञ्च।) वेगः। इत्यमरः।३। २। ३६॥ (यथा, अथर्ववेदे। १३। २। १३।
"तं समाप्नोति जूतिभिः॥")

जूतिका, स्त्री, (जूत्या कायतीति। कै+कः। ततष्टाप्।) कर्पूरभेदः। इति राजनिर्घण्टः॥

जूर, ङ य ई ज्यानौ। वधे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (दिवां-आत्मं-अकं-सकं-च-सेट्।) दीर्घौ। ङ य, जूर्य्यते। ई, जूर्णः। ज्यानिर्गतवक्रयोभावः। इति दुर्गादासः॥

जूर्णाख्यः, पुं, (जूर+क्तः। जूर्ण इति आख्या यस्य।) तृणविशेषः। उलू इति भाषा॥ तत्पर्य्यायः। शृङ्गः २ शूलकः ३ दर्भः ४ खरच्छदः ५। इति रत्नमाला॥ उलूकम् ६ उलपः ७। इति केचित्॥

जूर्णाह्वयः, पुं, (जूर्ण इति आह्वयः आख्या यस्य।) देवधान्यम्। इति हेमचन्द्रः॥

जूर्णिः, स्त्री, (ज्वर+"वीज्याज्वरिभ्यो निः।" उणां। ४। ४८। इति निः। "ज्वरत्वरेति।" ६। ४। २०। इत्यूट् च।) वेगः। इत्युणादिकोषः॥ आदित्यः। देहः। ब्रह्मा। ज्वरः। इति संक्षिप्तसारे उणादिवृत्तिः॥

जूर्त्तिः, स्त्री, (ज्वर्+भावे क्तिन्। "ज्वरत्वरेत्यादिना" ऊट् च।) ज्वरः। इत्यमरः।३।२।३६॥

जूष, अ वधे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-उभं-सकं-सेट्।) षष्ठस्वरी। अ, जूषति जूषते। परस्मैपदीत्यन्ये। इति दुर्गादासः॥

जूषं, क्ली, पुं, (यूष+पृषोदरात् साधुः।) यूषम्। मुद्गादिक्वाथरसः। इति लिङ्गादिसंग्रहटीकायां भरतः॥

जूषणं, क्ली, (जूष्यतेऽनेनेति। जूष+करणे ल्युट्।) वृक्षविशेषः। इति शब्दचन्द्रिका॥ धाइफुल इति भाषा॥

जृ, व्यक्कारे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-परं-सकं-अनिट्।) व्यक्कारस्तिरस्करणम्। जरति शत्रुं शूरः। इति दुर्गादासः॥

जृभ, इ ङ जृम्भे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-अकं-सेट्।) सप्तमस्वरी। इ, जृम्भ्यते। ङ, जृम्भते। इति दुर्गादासः॥

जृभ, ङ ई जृम्भे। गात्रशैथिल्ये इति यावत्। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-अकं-सेट्।) ङ, जभते। ई, जब्धः। इति दुर्गादासः॥

जृम्भः, पुं क्ली, (जृभ+भावे घञ्।) मुखादिविकाशः। हाइ इति भाषा॥ तत्पर्य्यायः। जृम्भणम् २ जृम्भा ३ जृम्भिका ४। इति शब्दरत्नावली॥ जम्भा ५ जम्भिका ६। इति राजनिर्घण्टः॥ (अस्य लक्षणं यथा, सुश्रुते। ३। ४।
"निद्रार्त्तस्येव यस्येहा तस्य तन्द्रां विनिर्दिशेत्।
पीत्वैकमनिलोच्छ्वासमुद्वेष्टन् विवृताननः॥
यच्चक्षुषति सनेत्रास्रं स जृम्भ इति संज्ञितः॥")
"जृम्भायर्थं समीरणात्।" इति वैद्यकम्॥
"क्षुद्रुत्पतनजृम्भेषु जीवोत्तिष्ठाङ्गुलिध्वनिः।
अवश्यमेव कर्त्तव्यश्चान्यथा तद्वधी भवेत्॥"
इति कर्म्मलोचनम्॥ *॥
विकाशः। स्फारितः। इति शब्दरत्नावली॥ (यथा, प्रबोधचन्द्रोदये।४।२८। "एताश्च प्रतिमुकुलजृम्भमधुपावलीरणितमुखरा जृम्भारम्भभरविगलन्मकरन्ददुर्द्दिनाः कुसुमसुरभयः॥")

जृम्भणं, क्ली, (जृम्भ+भावे ल्युट्।) जृम्भः। इत्यमरः। १। ७। ३५॥ (यथा, सुश्रुते। ३। ४।
"इन्द्रियार्थेष्वसंप्राप्तिर्गौरवं जृम्भणं क्लमः॥")

जृम्भा, स्त्री, (जृम्भ+भावे घञ् ततष्टाप्।) जृम्भः। इति शब्दरत्नावली॥ (यथा, देवीभागवते। १। १५। ६१।
"तुष्टिः पुष्टिः क्षमा लज्जा जृम्भा तन्द्रा च
शक्तयः॥")

जृम्भिका, स्त्री, (जृम्भा+स्वार्थे कन् टापि अत इत्वञ्च।) जृम्भः। इति शब्दरत्नावली॥ (निद्रावेगधारणजनितरोगविशेषः। यथा, वाभटे सूत्रस्थाने चतुर्थेऽध्याये।
"निद्राया मोहमूर्द्धाक्षिगौरवालस्यजृम्भिकाः।
अङ्गमर्दश्च तत्रेष्टः स्वप्नः संवाहनानि च॥"
जृम्भ+णिच्+ण्वुल्। टापि अत इत्वम्। जृम्भणकारकोऽस्त्रविशेषः। यथा, महाभारते। ५। ६। ५२।
"अहन्तस्ते महावक्षा जृम्भिकां हन्तनाशिनीम्॥")

जृम्भितं, क्ली, (जृभि+भावे क्तः।) विचेष्टितम्। प्रवृद्धम्। जृम्भा। स्फुटितम्। इति हेमचन्द्रः॥ (यथा, कथासरित्सागरे।२६।८६।
"अहो किमेतदाश्चर्य्यमायाडम्बरजृम्भितम्॥")
क्षीणा करणम्। इति मेदिनी। ते, ११२॥

जृम्भिणी, स्त्री, (जृभि+णिनिः।) एलापर्णी। इति शब्दचन्द्रिका॥ (एलापर्णीशब्देऽस्या विशेषो ज्ञेयः॥)

जृ, इर् ष म य ज्याने। इति कविकल्पद्रुमः॥ (दिवां-परं-अकं-अनिट्।) इर्, अजरत् अजारीत्। ष, जरा। म, जरयति। य, जीर्य्यति। ज्यानं गतवक्रयोभावः। इति दुर्गादासः॥

जॄ, गि कि ज्याने। इति कविकल्पद्रुमः॥ (क्र्यां-चुरांपक्षे भ्वां-च-परं-अकं-सेट्।) गि, जृणाति जीर्णः जीर्णिः। कि, जारयति जरति। इति दुर्गादासः॥

जेता, [ऋ] त्रि, (जयतीति। जि+तृच्।) जयशीलः। तत्पर्य्यायः। जिष्णुः २ जित्वरः ३ जेत्रः ४। इत्यमरः। ३। १। ७१॥ (यथा, रघुः। १२। ८६।
"जेतारं लोकपालानां स्वमुखैरर्च्चितेश्वरम्॥"